ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-12* March-2021
Anthology : The Research

प्रो. सुधीकांत भारद्वाज 'कल्प' विरचित 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य : एक अनुशीलन

Prof. Sudhikant Bhardwaj Shkalpashshrita Shparshuramodayash Epic: A Follow-up

Paper Submission: 05/03/2021, Date of Acceptance: 19/03/2021, Date of Publication: 24/03/2021

बलवंत सिंह चौहान
सह आचार्य,
संस्कृत विभाग,
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर
राजकीय महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रो. सुधीकांत भारद्वाज द्वारा रचित 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य संस्कृत भाषा का नूतन महाकाव्य है। 17 सर्गों तथा 1504 पद्यों में निबद्ध प्रस्तुत महाकाव्य में भृगुपुत्र ऋचीक ऋषि से लेकर भगवान् विष्णु के 16वें अवतार परशुराम के जन्म तक की कथावस्तु मिलती है। भगवान् परशुराम का अवतार आततायी और अन्यायी राजाओं को दण्ड देने के लिए हुआ था। सेना सहित सहस्रबाहु अर्जुन का संहार करने वाले परशुराम ने 21 बार पृथ्वी को दुष्ट राजाओं से मुक्त करवाया था। कविवर ने महाकाव्य की निर्विघ्न समाप्ति के लिए मंगलाचरण के रूप में वीणापाणि सरस्वती को नमस्कार करके गौरीपुत्र गणेश को नमस्कार किया है। महाकाव्य में कुशिकवंश में उत्पन्न महान् यशस्वी, सत्यवादी और प्रजा को सर्वदा प्रसन्न करने वाले 'गाधि' नामक राजा की देवकन्या के समान अनिन्द्य सुन्दरी सत्यवती का, योगविद्या में निपुण ऋचीक के पाणिग्रहण संस्कार, यशस्वी वीर सत्यवती के पुत्र जमदग्नि और रूपवती रेणुका का विवाह संस्कार, करोड़ों सूर्य के समान तेज और पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान दिव्य मुख वाले परशुराम के जन्म तक के वृत्तान्त को महाकाव्य में प्रस्तुत किया है।

'Parshuramodayam' mahakavya, composed by Prof. Sudhikant Bhardwaj, is the latest epic of the Sanskrit language. In the epic presented in 17 cantos and 1502 verses, there is a story from Bhriguputra Ritchik Rishi to the birth of Parashurama, the 16th incarnation of Lord Vishnu. Lord Parshuram was incarnated to punish the tyrant and unjust kings. Parashurama, who killed Sahasrabahu Arjuna along with the army, had liberated Prithivi from evil kings 21 times, Kavivara has greeted Gauriputra Ganesh by saluting Veenapani Saraswati as Mangalacharan for the end of the epicIn the epic, Ananda Sundari Satyavati, the great goddess, Satyavati born in the Kushik dynasty, and the king who always pleases the people, like Devakanya, the Panigrahan rites of the masterful master in yoga, Jamadagni, son of Yashasvi Veer Satyavato and marriage rites of Rupavati Renuka, crores of crores. The account of the birth of Parashurama with the celestial face like the Sun and the moon of the full moon is presented in the epic.

मुख्य शब्द : दैवयोगेन, जीर्णदेहा, कृतार्थमात्मनः, परिवारजीवः, श्वासमात्रेण, वनशान्तदिक्षु, श्रीसौन्दर्यविभूषित, स्वामिनी, वैक्लव्यम्।

Daivayogen, Jirnadeha, Kritarthamatmanah, Parivarivah, Sansmataran, Vanasantadaksha, Sreesaundrayabhibhishtha, Swamini, Vaichlavya.

प्रस्तावना

कविवर कल्प विरचित 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य के 'ऋचीकाश्रमवर्णन' नामक प्रथम सर्ग में भृगुपुत्र ऋचीक के आश्रम का वर्णन है। 'भृगोराश्रमदर्शनम्' नामक द्वितीय सर्ग में तीर्थाटन के लिए गए हुए भृगु मुनि का वर्णन है। 'ऋचिक–राजपुत्र्यात्रिमुखम्' तृतीय सर्ग में ऋचीक व महाराजा गाधि की पुत्री 'सत्यवती' के चामत्कारिक समागम का वर्णन है। चतुर्थ सर्ग' राजकुमारीप्रणयवेदना' में राजकुमारी सत्यवती की ऋषि ऋचीक के प्रति गूढ़ आसक्ति का चित्रण है। 'राजकुमारी शिक्षणम्' नामक पञ्चम सर्ग में राजकुमारी

ऋचीक से युद्धशास्त्र की विद्या ग्रहण करती है और ऋचीक के नैपुण्य से अभिभूत हो जाती है। षष्ठ सर्ग 'राजकुमारीसन्देशप्रेषणम् ' में सत्यवती की सखी सुजाता द्वारा ऋचीक को उसके स्वयंवर और विरह व्यथा का सन्देश दिया जाता है। 'राजकुमारीस्वयंवर' नामक सप्तम सर्ग में राजा गाधि द्वारा 1000 श्यामकर्ण घोड़े लाने वाले राजकुमार से अपनी पुत्री के विवाह की घोषणा की जाती है। 'श्यामकर्णाश्वानयनम्' सर्ग में ऋचीक ऋषि सिन्धु नदी को पार करके अपने अद्भुत प्रभाव से 1000 श्यामकर्ण घोड़े एकत्रित करके वापिस लौटते हैं 'ऋचीक–सत्यवतीविवाहः' सर्ग में ऋचीक व सत्यवती का विवाह सम्पन्न होता है। 'यज्ञोत्साहः' सर्ग में विभिन्न वेदियों की रचना करके तपोवन में यज्ञ का आयोजन किया जाता है। 'गाधेराश्रमप्रयाणम्' नामक एकादश सर्ग में राजा गाधि सपत्नीक अपनी अंगरक्षक सेना के साथ आश्रम को पुत्र –प्राप्ति की कामना से प्रस्थान करते हैं। 'यज्ञपूर्वविधानम्' नामक द्वादश सर्ग में भृगु और सत्यवती का आश्रम में भव्य स्वागत किया जाता है। 'कृतवीर्यदर्पविनाशः ' सर्ग में ऋचीक द्वारा क्रूर राजा कृतवीर्य के दर्प का विनाश किया जाता है। 'जमदग्निजन्मनामः ' चतुर्दश सर्ग में योगी ऋचीक की पत्नी सत्यवती अग्नि के पिण्ड के समान तेजस्वी 'जमदग्नि' बालक को जन्म देती है। जमदग्नितीर्थाटनम्' सर्ग में नवयुवक जमदग्नि अनेक तीर्थस्थलों और योगियों द्वारा सेवित तपोवनों में विचरण करते हैं। 'जमदग्नेरभिषेको' नामक सोलहवें सर्ग में तीर्थाटन के पश्चात् ऋचीक जमदग्नि का सर्वगुणसम्पन्न समझकर कुलपति पद पर अभिषेक करते हैं। 'परशुरामजन्म' नामक अन्तिम सर्ग में इक्ष्वाकु वंश के राजा प्रसेनजीत की पुत्री रेणुका और जमदग्नि ऋषि का 'पाणिग्रहण' संस्कार होता है तथा रेणुका के गर्भ से पुत्र प्राप्ति का अभीष्ट समाचार मिलता है। इस प्रकार 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य का कथानक सरस, सुसम्बद्ध एवं सहज प्रवाह से युक्त है। चरित प्रधान महाकाव्य में कथानक को समधिक रोचक और हृदयावर्जक बनाने के लिए मनोहर प्रसंगों की सृष्टि की गई है जो कथा का प्रवाह बनाए रखने में पूर्ण सक्षम है। इतिहास प्रसिद्ध इतिवृत्त को आधार बनाकर कवि 'कल्प' ने अनेक घटनाओं के नियोजन एवं अवान्तर कथा के संयोजन से कथा–प्रवाह को गतिशील व अक्षुण्ण बनाए रखने की सतत चेष्टा करके अपनी अपूर्व कला–प्रज्ञा, वैदग्ध्यपूर्ण कल्पना और लोकविश्रुत बहुज्ञता का परिचय दिया है। कथाप्रवाह में कहीं भी अवरोध या अप्रासंगिक वृत्तान्त को कविवर ने किञ्चित् भी स्थान नहीं दिया है।

शोध उद्देश्य

यह शोध कार्य साहित्यिक विधा से सम्बन्धित है। वर्तमान समय में साहित्य के मापदंडों का पालन ठीक से नहीं हो रहा है। अतः ऐसे समय में साहित्य के विद्यार्थियों को इस शोध कार्य से अनेक लाभ हो सकेंगे।

1. साहित्य की विधा, विशेषकर महाकाव्य के लक्षणों से परिचित करवाना।
2. साहित्य के भाव पक्ष व कला पक्ष की बारीकियों का अध्ययन कर रहे शोधार्थियों और अध्येताओं को साहित्य सृजन के प्रति उन्मुख करना।
3. साहित्य में श्रीवृद्धि करना और नवसृजन की प्रेरणा देना।
4. अध्येताओं और शोधार्थियों को महाकाव्य से अवगत करवाना ताकि पढ़कर वे विपरीत परिस्थितियों में धैर्य धारण करने, प्रेम, सहिष्णुता, कोमलता, उदारता, कर्तव्यनिष्ठा, सदाचार आदि अनेकविध मानवीय मूल्यों को आत्मसात् कर सकें।
5. पाठकों और शोधार्थियों को को भोगवादी संस्कृति के विरुद्ध त्यागमय व तपमय जीवन जीने की प्रेरणा मिल सके।
6. लोक व्यवहार का ज्ञान, इन्द्रिय–निग्रह, गुरु–सम्मान, यज्ञ महत्ता, नारी सम्मान, भारतीय संस्कृति की रक्षा प्रभृति आदर्शों से अध्येताओं और शोधार्थियों को अवगत करवाना।

शोध प्रविधि

इसके अन्तर्गत विभिन्न विषयों में अलग–अलग पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं। साहित्यिक कृतियों को शोध का विषय बनाये जाने पर उनका निर्धारित मानकों के आधार पर मूल्यांकन करने की परिपाटी प्रचलित है। महाकाव्य के आकलन हेतु आचार्य मम्मट, दण्डी व आचार्य विश्वनाथ आदि काव्यशास्त्रियों ने महाकाव्य के जिन उपादानों का उल्लेख किया है, वे ही कसौटियाँ अंगीकार कर उक्त कृति का आकलन किया गया है। चूंकि 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य काव्यशास्त्रीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण विषय है। अतः निर्दिष्ट तत्त्वों के आधार पर इसका अनुशीलन किया गया है।

विषय विस्तार

रस–योजना

वहीं उत्तरोत्तर रोचकता और आह्लाद की अभिवृद्धि के लिए महाकाव्य में रस सन्निवेश होना चाहिए। वही कृति हृदयावर्जक और चित्ताकर्षक होती है, जिसमें सुहृदयों को काव्यरस माधुरी का आस्वाद मिल सके। काव्य में रसाभिव्यक्ति को संस्कृत साहित्य में आलंकारिकों ने आत्मभूत तत्त्व माना है। कविवर भारद्वाज विरचित 'परशुरामोदयम् महाकाव्य में अंगीरस के रूप में शृङ्गाररस विलसित हुआ है। महाकाव्य में अंगरस के रूप में वीर, वात्सल्य, शान्त आदि रसों को भी स्थान दिया गया है। विवेच्य महाकाव्य में शृङ्गाररस की अभिव्यक्ति अधिसंख्य प्रसंगों में हुई है।

दशम सर्ग में ऋचीक और गाधि की पुत्री सत्यवती का शास्त्रानुसार विवाह होता है। फूलों से सजी हुई सुखद शय्या पर बैठी सत्यवती को देखकर ऋचीक पर कामदेव हावी हो जाता है। उक्त स्थल पर शृंगार रस का रमणीय चित्रण कविवर ने किया है।

चिरौत्सुक्येनाढ्या च नृपतनया यौवनयुता,
प्रगाढ़ासक्तापि प्रमदमथिता सा तरलिता।
तमालिंगौत्सुक्येन विततभुजं वारणपरा,
स्वयं तृष्णार्त्ता चापि न समवदत् चित्तलषितम् ।।[1] 10/6त्र

शनैस्तौ प्रीत्योः संगममदनजलैः सिक्तवपुषौ,
निमग्नावानन्दस्य मदजसिन्धावनुपमे।
जगद् विस्मृत्यैकात्मरूपमनसौ ब्रह्मणि गतौ,
पवित्रिकुर्वन्ताविव सकललोकान् विबभतुः।।[2]

उपर्युक्त पद्यों में गाधि राजा की पुत्री सत्यवती आलम्बन है। सत्यवती का यौवन से भरा हुआ शरीर, सुन्दर सुखद सज्जा, कामासक्त नयन, नयनों के कटाक्ष, आलिंगन के लिए तड़फती भुजाएँ व तात्कालिक वातावरण आदि उद्दीपन विभाव हैं। ऋचीक द्वारा सत्यवती को हाथों से स्पर्श करना, कामजन्य आनन्द में डूब जाना व शृंगारिक चेष्टाएँ आदि अनुभाव हैं। लज्जा, हास, उत्कण्ठा, मुस्कान आदि सञ्चारी भाव हैं। यहाँ विभाव, अनुभाव तथा सञ्चारी भावों के संयोग से 'रति' नामक स्थायी भाव सामाजिकों के हृदय में उद्भुत होकर आनन्द प्रदान कर रहा है।

त्रयोदश सर्ग में हैहयवंशी क्रूर व अहंकारी राजा कृतवीर्य द्वारा ऋचीक ऋषि की भार्या सत्यवती को ग्रहण न कर पाने पर सैनिकों के सहित आक्रमण किया जाता है। कृतवीर्य बाणों के प्रहार द्वारा ऋचीक ऋषि पर आक्रमण करता है तो ऋचीक ऋषि द्वारा पाशों से बाँध लिये जाने पर कृतवीर्य उन्हें कायर कहते हुए पाशों में बाँधकर मारने की बात कहता है। कृतवीर्य द्वारा ललकारने पर ऋचीक ऋषि उसके पाश खोल देते हैं। दोनों में द्वन्द्व युद्ध होता है। अन्त में कृतवीर्य प्राणों के भय से कांप जाता है और युद्धभूमि से उसी प्रकार भागता है जिस पर पक्षियों का शिकारी सिंह से डरकर भागता है।

परं ऋचीको विहसन्निवाग्रे, प्रशिक्षणाभ्यासिनमेव मत्वा।
सेहे प्रहारान् स्वशरेषु भूयोऽकृत्वा प्रहारान् स्वयमारितोषात्।[3]
यदा रिक्तविद्य इवासमर्थः श्रान्तः प्रहारे शिथिलो बभूव।
तदा तमूचे भृगुवंशसूर्यः कुरु प्रहारं यदि दर्पशेषः ।। [4]
प्रकम्पितः प्राणभयेन राजा प्रमाय वीर्यं भृगुजस्य साक्षात्।
इयेष युद्धात् प्रपलायितुं स खगानुखेटीव मृगेन्द्रभीतः।। [5]

उपर्युक्त पद्यों में हैहयवंशी राजा कृतवीर्य आलम्बन हैं। कृतवीर्य का क्रोधित होना, सत्यवती के स्वयंवर में पराजित होने का बदला लेने के लिए ललकारना, ऋचीक ऋषि पर बाणों का प्रहार करना, क्रोधावेश में कांपना तथा तात्कालिक वातावरण उद्दीपन विभाव हैं। ऋचीक ऋषि द्वारा कृतवीर्य पर बाणों से प्रहार करके पराजित करना अनुभाव हैं। हर्ष, उग्रता, गर्व तथा आवेग आदि सञ्चारी भाव हैं। यहाँ विभाव, अनुभाव तथा सञ्चारी भावों के संयोग से 'उत्साह' नामक स्थायीभाव सामाजिकों के हृदय में उद्भुत होकर आनन्द प्रदान कर रहा है। नवम सर्ग में विवाह मण्डप में ऋचीक ऋषि और सत्यवती का विवाह सम्पन्न होता है। आभूषणों से सुसज्जित अपनी पुत्री की विदाई के अवसर पर राजा गाधि की आँखें आँसुओं से गीली हो जाती हैं और वे उसको अपने सीने से लगाकर आलिंगन करते हैं । पुत्री के अश्रुओं से गाधि का शरीर भीग जाता है। उक्त स्थल पर कविवर ने कमनीय 'वात्सल्य' रस का चित्रण किया है।

पुत्रीं गाधिरितो जगाम सखिभिः सज्जीकृतां भूषणैः
आश्लिष्योरसिधारितामवनतां स्नेहाश्रुसिक्तस्तया ।
संस्तभ्यात्मन औरसं विचलनं धैर्याद् बभाषे सुतां,
मा रोदीस्तनयं यशस्विनी शुभे त्वामीक्षतऽग्रे सुखम्।।[6] 9/60

उपर्युक्त पद्य में गाधि की पुत्री सत्यवती आलम्बन है। विदाई के अवसर पर पुत्री का अपने पिता से लिपटना, आँखों से अश्रु प्रवाहित होना व तात्कालिक वातावरण उद्दीपन विभाव है। पिता द्वारा पुत्री को बाहों में भर लेना तथा अश्रु प्रवाहित करना अनुभाव है। हर्ष, औत्सुक्य, चपलता आदि सञ्चारी भाव हैं। यहाँ विभाव, अनुभाव और सञ्चारी भावों के संयोग से उद्बुद्ध हुआ 'वत्सल' नामक स्थायीभाव परिपक्व होकर 'वात्सल्य' रस के रूप में आस्वादित होता हुआ आनन्द प्रदान कर रहा है।

चरित्र–चित्रण

वहीं चरित्र–चित्रण की दृष्टि से भी 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य एक सफल कृति है। कविवर ने पात्रों के चरित्र–चित्रण में अपने अनुपम कौशल को प्रदर्शित किया है। इसके सभी पात्र उदात्त मानवीय गुणों से विभूषित हैं। कविवर ने चतुर्दश सर्ग में ऋचीक ऋषि और गाधि की पुत्री सत्यवती से समयानुसार सृष्टि धर्म के अनुसार 'जमदग्नि' नामक पुत्र उत्पन्न होता है, जो अग्नि के पिण्ड के समान तेजस्वी व विद्युत् के समान चञ्चल था। वह मानो योग के फलस्वरूप कोई दूसरा ही सूर्य उत्पन्न हुआ था। वह गौरांग बालक मूर्तिमान अंगों के सहित वेदों का ज्ञाता था। उसके तेजोमय रूप को देखकर सादृश्य के आधार पर ब्राह्मण ने उसका नाम 'जमदग्नि' रखा था।

आयाते काले यथासृष्टिधर्मं, जज्ञे वह्नेः पिण्डतुल्यः सुतेजाः ।
बालो विद्युत्सन्निभः कृच्छ्रदर्शः, सूर्योऽन्यो कश्चिद् यथा योगपाकात् ।। [7]

वह सूर्यबिम्ब के समान तेज से युक्त अधिक प्रकाशवान् था। उसने वृत्तियों के सहित समस्त शास्त्रसमूह को बिना प्रयत्न के ही ग्रहण कर लिया था तथा युद्धकौशल की कलाओं में निपुणता प्राप्त कर ली थी।

सर्वशास्त्रनिपुणोऽपि भार्गवः, स्पर्धितोऽपि बटुकैर्बलै युवा।
भूयसीं रुचिमदर्शयत् न वै, युद्धकौशलकलासु सर्वदा।।[8]

वह वन की शान्त और निर्जन दिशाओं में वेद–वाङ्मय का आदरपूर्वक अभ्यास करता था तथा ऋक्, यजुः व साम को ब्रह्म की मूर्ति मानकर सदैव इष्ट देव के समान भजता रहता था।

वेदवाङ्मयमसेवतादरात् निर्जनासु वनशान्तदिक्षु सः ।
सर्वदेष्टमिव सोऽभजत् त्रयीं, ब्रह्मविग्रहसमासहर्निशम्।।[9]

इसी प्रकार प्रथम सर्ग में भृगुपुत्र ऋचीक श्री और सौन्दर्य से शोभायमान बताए गए हैं। वे चारों वेदों और सभी शास्त्रों के ज्ञाता बताए गए हैं।

सद्योलब्धयुवावस्थः श्री सौन्दर्यविभूषितः।
नवे वयसि बभ्राजे कामदेव इवापरः।। [10]
साङ्गा अधिगता वेदाः सर्वा शास्त्रपरम्परा।
पितुर्मुखादनायासं दाय इवानुवंशगः।।[11]

वे किशोरावस्था में ही ब्रह्मतेज से युक्त होकर असह्य तेज से युक्त लगते थे, जैसे मिथुन राशि के अंत में अपनी गर्भ किरणें छोड़ता हुआ सूर्य असह्य होता है। जैसे समुद्र में बिना किसी रोक–टोक के ऊपर उछलता हुआ जल गम्भीर घोष करता है। उसी प्रकार भृगुपुत्र की कीर्ति भी बिना किसी विरोध के समान रूप से लोक में चारों ओर फैली हुई थी।

उन्होंने सत्यवती को परोपकारी होने का परिचय देते हुए कहा था कि यह हिरण वध्य नहीं है क्योंकि यह मेरे परिवार का प्राणी है।

तपोवन ह्यत्र समीपदेशे, चरन्ति मृगा भयवर्जिताश्च।
अतो न वध्यो हरिणः सुबाले, यतो हि मेऽयं परिवारजीवः।।[12]

वहीं गाधिपुत्री सत्यवती भी धनुषविद्या में निपुण और विदुषी के रूप में महाकाव्य में चित्रित हैं। वह अपना परिचय ऋचीक को ललकारते हुए देती है कि आप ब्राह्मण और शास्त्रहीन हो, इसलिए वध के योग्य नहीं हो। मुझसे धनुर्विद्या में युद्ध करना चाहते हो तो व्यर्थ का विवाद छोड़कर शस्त्र धारण करो एवं युद्ध करो।

उवाच सा विप्रसुतोऽसि यस्मा,
च्च शस्त्रहीनो न वधाय योग्यः।
पणाय हित्वा खलु फल्गुवादं,
गृहाण शस्त्रं कुरु युद्धचर्याम्।।[13]

शास्त्र विद्या में परीक्षा लेने के पश्चात् ऋचीक स्वयं उनकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि तुम विदुषी और शास्त्रविद्या में निपुण हो।

मृषा न ते च व्यवहारचारस्, सुपण्डितासि प्रखरा च शस्त्रे ।
प्रकृष्टकर्मिण्यबलापि भूत्वा, त्वचा सुचर्यं पितृराज्यवृत्तम्। [14]

इसी प्रकार ऋचीक सत्यवती के पिता 'गाधि' नामक राजा से उनकी पुत्री की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि आपकी पुत्री गुणी व स्वाभिमानी है। यह वीर और धनुर्धारियों में श्रेष्ठ है।

सुता गुणज्ञा भवतः स्वमानिनी,
तथा च वीरा शरधारिणं वरा।
भवाञ्च जानातु कृतार्थमात्मनः,
सुसन्ततेर्जन्मदकर्म धर्मतः।। [15]

महाकाव्य में गाधि पुत्री सत्यवती स्त्रीयोचित स्वभाव से युक्त, शंकालु, चरित्रवती, दिव्य सुन्दरी, बुद्धिमती, धर्मपरायण और सकल गुणों से सम्पन्न व रति की साररूप चित्रित की गई है।

संज्ञा लब्ध्वा करणविकलो भार्गवोऽसौ विसन्नो,
दिव्यां नारीं बहुमतिमतीं गाधिकन्यां सुदेहाम्।
धर्मोपेतां सकलगुणिनीं साररूपं रतेस्ताम्।
वैक्लव्यं सोऽलभत विमनाश्चिन्तयन् भूरि भूयः।।[16]

वहीं खल पात्रों में कविवर ने बारहवें सर्ग में हैहय कुल में उत्पन्न हुए माहिष्मती के प्रसिद्ध राजा कृतवीर्य को भी स्थान दिया है। इस प्रकार कविवर ने पात्रों के चरित्राधान के माध्यम से सहृदयपाठकों और श्रोताओं को सत्मार्ग में प्रवृत्त होने और असत् मार्ग से निवृत्त होने का उपदेश अपनी कृति के माध्यम से दिया है।

प्रकृति–चित्रण

वहीं 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य में प्रकृति चित्रण के अनेकविध उदाहरण यत्र–तत्र बिखरे पड़े हैं। प्रकृति का स्वरूप इतना व्यापक, आकर्षक व सजीव है कि जब तक मनुष्य का उसके साथ तादात्म्य स्थापित नहीं होता तब तक उस काव्य की पूर्णता नहीं होती है। समस्त भारतीय साहित्य में सौन्दर्य की स्थापना और रमणीयता की सृष्टि के लिए प्रकृति–चित्रण प्रमुख तत्त्व सा बन गया है। सच पूछा जाए तो भारतीय मनीषा प्रकृति के साथ सुदूर अतीत से ही अंतरगतया सम्पृक्त रही है। महाकाव्य के प्रथम सर्ग में कविवर सरस्वती नदी के किनारे स्थित भार्गव मुनि के आश्रम के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यह आश्रम सौन्दर्य में नन्दन वन के समान है। आश्रम के चारों ओर सघन वृक्षों की पंक्तियाँ हैं। वृक्षों के बीच का अंतराल लताओं से ढका हुआ था। इस प्रकार आश्रम के चारों ओर दीवार की सी मेखला बनी हुई लगती थी।

सरस्वत्यास्तटे पूतो भार्गवस्याश्रमो मुनेः ।
वनस्थल्यां सुरम्यायां नन्दनतुलतां दधौ ।।[17]
लताच्छन्नान्तरालाभिः सधनद्रुमपंक्तिभिः।
देशो योग्यनृपस्येव कृतप्रचीरमेखलः।।[18]

आश्रम का सौन्दर्य मुनियों के मन को इस प्रकार हर लेता था जैसे पानी का वेग खेत की मेड को बहाकर ले जाता है। यह आश्रम अनेक प्रकार के पुष्पों से सुगंधित और सुवासित था।

रुचिराभ्यन्तरक्षेत्रो बहुपुष्प सुवासितः ।
अपां वेगो यथा रोधं यतीनां मन आहरत् ।।[19]

आश्रम में निरंतर चलने वाले यज्ञों की अग्निओं का धुआँ इतना सघन और ऊँचा होता था कि आकाश को छूने वाला स्तम्भ प्रतीत होता था ।

विधिनिर्मितवेदीषु प्रज्वलितमखवह्नीनाम्।
धूमस्तम्भैर्नभस्स्पृग्भिः प्रासूच्यन्त महोच्चताः।। [20]

वहीं पञ्चम सर्ग में राजा गाधि अपनी पुत्री के साथ जब ऋचीक ऋषि के आश्रम में प्रवेश करते हैं तो वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य देखकर गद्गद हो उठते हैं। तपोवन के भीतरी भाग में राजा प्रांगण को देखकर चकित हो जाते हैं जहाँ तरह–तरह के पुष्पों से सुगन्धि आ रही थी और वृक्षों की शाखाएँ आकाश को छूने वाली थी।

तपोवनाभ्यन्तरभागमागतो ददर्श राजा चकितो मनोहरम्।
अनेकपुष्पैरधिवासितं भृशं, नभोलिहं वृक्षशिखाभिराङ्गनम्।।[21]

यज्ञ के धुएँ से सुगंधित मन्द–मन्द पवन के नथूनों में प्रवेश होने से राजा शांति का अनुभव करता है। निश्चितत: पवित्र वस्तु के साहचर्य से रजोगुण द्वारा विकृत लोगों का मन भी प्रसन्न हो जाता है।

नसो प्रवेशान्मखधूमगन्धिनः सुमन्दवातस्य शमं नृपोऽन्वभूत्।
पवित्रसंगेन सदा प्रजायते, मनः प्रतोषोऽपि रजोविकारिणाम्।[22]

तपोवन के वातावरण में प्रवेश करने से स्थित होकर राजा की पुत्री सत्यवती इस प्रकार कान्तिमती हो जाती है जैसे वायु रहित हवा में दीपक की निश्चल लौ प्रकाश से युक्त हो जाती है।

चित्तेन राज्ञस्तनुजापि न स्थिरा,
वनस्य वातावरणे प्रवेशतः।
बभूव युक्ता प्रभयात्र निश्चला,
शिखेव दीपस्य विवातमन्दिरे।। [23]

महाराजा गाधि ऋचीक ऋषि से तपोवन की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि हम आज धन्य हो गए हैं क्योंकि यह तपोवन वनवासियों का घर है तथा ऐसी भूमि पर स्थित है, जिसको पैर सहन नहीं कर सकते हैं।

अहो सुधन्या वयमद्य चक्रिणो,
नृपेश्वरस्यास्ति यदत्र पुण्यतः।
समागमोऽस्मिन् वनवासिनां गृहे,
पदक्षमानर्हभुविस्थिते वने ।। [24]

इस प्रकार कविवर ने आद्योपान्त कोमल और सरस प्रकृति का महाकाव्य में वर्णन किया है। महाकाव्य में

वर्णित प्रकृति चित्रण अप्रतिम, अतिरमणीय, मनोहारी और आनन्ददायी है। कविवर ने अपनी प्रज्ञा शक्ति से काव्य में अनेकविध स्थलों पर वसन्त ऋतु, मन्द समीर, सरस्वती नदी, पक्षियों के कलरव, हिरणों की स्वाभाविक विचरण गति, मयूरों के नृत्य, कोयलों के कुञ्जन, सिंधु नदी, पहाड़ व चोटियों आदि का स्वाभाविक चित्रण किया है। इनके द्वारा चित्रित प्रकृति वर्णन इतने सजीव व स्वाभाविक हैं कि वर्णित वस्तुएँ हमारे नेत्रों के सम्मुख नृत्य कर उठती हैं।

भाषा शैली

कविवर का 'परशुरामोदयम्'महाकाव्य में भाषा पर असाधारण अधिकार है। कवि छन्दों और अलंकारों के चातुर्यपूर्ण निबंधन में जैसे सिद्धहस्त हैं, उसी प्रकार विषय और वर्णनानुरूप भाषा के गठन में भी निपुण हैं साधारणतया उनकी भाषा प्रसाद गुण व वैदर्भी रीति प्रधान है। काव्य में प्रयुक्त प्रकृति चित्रण, गुण, रीति, अलंकार व छन्दादि वर्णन सर्वत्र मनोरम रीति से सन्निविष्ट हुए हैं। कवि का उपयुक्त शब्दचयन और भावपूर्ण शब्दविन्यास से अद्भुत कौशल प्रकट हुआ है। शब्द कौशल केवल चमत्कार विधायक ही नहीं, अपितु भावों की व्यञ्जना करने वाला और रसोद्रेक में पूर्ण सार्थक सिद्ध हुआ है। महाकाव्य में पदे–पदे सरसता और गुणात्त्वाधान दर्शनीय है। महाकाव्य में भावानुकूल शब्दों के प्रयोग के साथ–साथ अनेक स्थलों पर शब्दों द्वारा ऐसे चित्र अंकित किये हैं, जिन्हें पढ़ते ही सहृदय के मस्तिष्क में प्रस्तुत वृत्तान्त साक्षात् उपस्थित–सा हो जाता है। षष्ठ सर्ग में राजा गाधि अपनी पुत्री सत्यवती को युद्धशास्त्र की विद्या सिखाने हेतु ऋचीक ऋषि के आश्रम में छोड़ देते हैं। यद्यपि सत्यवती के मन में ऋचीक के प्रति गाढ़ आसक्ति है, वहीं ऋचीक भी आचार्यत्व के दायित्व के कारण अपनी रुचि प्रकट नहीं करते हैं। वह अपनी मन की दुर्बलता पर नियंत्रण करके ध्यान में मन को लगाते हैं। दैवयोग से सत्यवती के स्वयंवर का सन्देश उसकी सखी सुजाता द्वारा ऋचीक को पहुँचाया जाता है। सुजाता राजकुमारी का सन्देश सुनाती है कि वे स्वयंवर में अवश्य आवें अन्यथा वह अपने प्राणों का त्यागकर देगी। यहाँ कविवर ने राजकुमारी और ऋचीक की कुल मर्यादा का ध्यान रखकर सुजाता के माध्यम से सन्देश इस प्रकार पहुँचाया है –

उज्झित्वा सा ह्यशनमथ पानं वियोगेन तप्ता,
हित्वा सर्वा रुचिमनुदिनं क्षीयते जीर्णदेहा।
मौनं धृत्वा चपलमुखरपि स्वभावेन बाला,
जीवत्येषा शिथिलवपुषा श्वासमात्रेण योगिन।। [25]
दृष्टावस्था न कति दिवसान् सद्मनीषदिवकारा,
कार्याश्रान्तेति मनसि विचारेण सोपेक्षिता वै ।
अद्यत्वे सा स्फुटमतिकृशा धार्यते रोगचिह्नैः,
तस्मात् चिन्तातुरनृपकुलोऽभूद् भिषग्भिः प्रपूर्णः।। [26]

इस प्रकार कविवर ने संस्कृत की वर्तमानकालिक परिस्थितियों को मध्यनजर रखते हुए संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार और लोकप्रियता के लिए सहज प्रवाहमयी एवं क्लिष्टता रहित भाषा का प्रयोग महाकाव्य में सर्वत्र किया है।

वहीं भाषा को अलंकृत करने के लिए कविवर ने अपनी कृति में रूपक, अर्थान्तरन्यास, उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति, श्लेष, दृष्टान्त, उपमा प्रभृति अलङ्कारों की झड़ी–सी लगा रखी है। कृति में प्रयुक्त अलङ्कार काव्य शरीर की शोभावृद्धि तथा रसाभिव्यक्ति करने में सहायक रहे हैं। उत्प्रेक्षा अलङ्कार का प्रयोग द्रष्टव्य है–

मनो न तस्थावचले समाधौ, यथा न यूपोऽदृढभूमिखाते।
महाविनाशाय विकार ईषत्, प्रगाढमैत्र्या इव संशयांशः।।[27]

रूपक अलङ्कार का प्रयोग देखिए –

विलोकयन्ती नयनाद्रबिम्बे मुनेः स्वमूर्तिं गलिताङ्गराशिः ।
चिक्षेप माल्यं मुनिकण्ठवृत्ते, चार्घाश्रुधारां चरणार्कबिम्बे।।[28]

क्रमशः अर्थान्तरन्यास अलङ्कार का कमनीय उदाहरण देखने योग्य है –

रुचिर्विशेषा शरकौशलेषु मे, परं विवित्सापि नयशास्त्रकर्मसु।
न नीतिहीनाः सफलीभवन्ति वै,
सुशिक्षिताः सद्गुरुतोऽप्यधीतिनः।। [29]

स्वभावोक्ति अलङ्कार का सुन्दर प्रयोग द्रष्टव्य है

सरस्वत्यास्तटे पूतो भार्गवस्याश्रमो मुनेः ।
वनस्थल्यां सुरम्यायां नन्दनतुलतां दधौ।। [30]

इस प्रकार कृति में प्रयुक्त अलङ्कार काव्य शरीर की शोभावृद्धि करने में सहायक रहे हैं। काव्य में प्रयुक्त अलङ्कार कथा के प्रवाह को आगे बढ़ाते हुए रसाभाव को समुज्ज्वल करने में पूर्णतः सहभागी रहे हैं। वहीं कविवर ने उपेन्द्रवज्रा, मालिनी, स्रग्धरा, उपजाति, अनुष्टुप् आदि छन्दों का प्रयोग अपनी कृति में अनायास ही किया है।

निष्कर्ष एवं राष्ट्र को सन्देश

मानवीय मूल्यों में हो रहे ह्रास, चरित्र–पतन, स्वार्थपन, महिला उत्पीड़न, हिंसाचार और आध्यात्मिकता पर हो रहे कुठाराघात जैसे अमानवीय कृत्यों की ओर अग्रसर हो रहे तरुणवर्ग को कविवर का महाकाव्य नवीन आदर्श की अनुप्रेरणा से सञ्जीवित करने का सन्देश प्रेषित कर रहा है। कवि ने अपनी कृति के माध्यम से समाजसेवा, परोपकार, मातृभूमि–प्रेम, उदारता, मृदुता, नैतिकता आध्यात्मिकता, कष्ट–सहिष्णुता, त्याग, मर्यादापालन, भगवद्विश्वास, शास्त्रमर्यादा, संसार की क्षणभंगुरता, आतिथ्य सत्कार, यज्ञ की महत्ता आदि का सन्देश पदे–पदे दिया है। इस प्रकार कविवर ने भौगोलिक और सांस्कृतिक परिचय देकर श्रोताओं और पाठकों के मन में मातृभूमि के प्रति स्वाभिमान और गौरवाधायक तत्त्वों की सृष्टि की है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 10/6*
2. *'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 10/8*
3. *'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 13/87*
4. *'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 13/88*
5. *'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 13/90*
6. *'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिसर्ज, नई दिल्ली, 9/60*

7. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 14/51
8. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 15/9
9. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 15/10
10. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1/35
11. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1/36
12. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 3/24
13. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 13/42
14. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 3/72
15. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 5/51
16. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 5/120
17. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1/19
18. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1/20
19. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1/21
20. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1/45
21. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 5/25
22. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 5/26
23. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 5/27
24. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 5/29
25. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 6/43
26. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 6/44
27. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 3/9
28. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 7/107
29. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 5/81
30. 'परशुरामोदयम्' महाकाव्य, प्रो.सुधीकांत भारद्वाज, भारद्वाज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1/19